Year-68, Volume-3
July - Sep. 2015

RNI No. 10591/62
ISSN 0974-8768

113
122

अनेकान्त

(जैनविद्या एवं प्राकृत भाषाओं की त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ANEKĀNTA

(A Quarterly Research Journal for Jainology & Prakrit Languages)

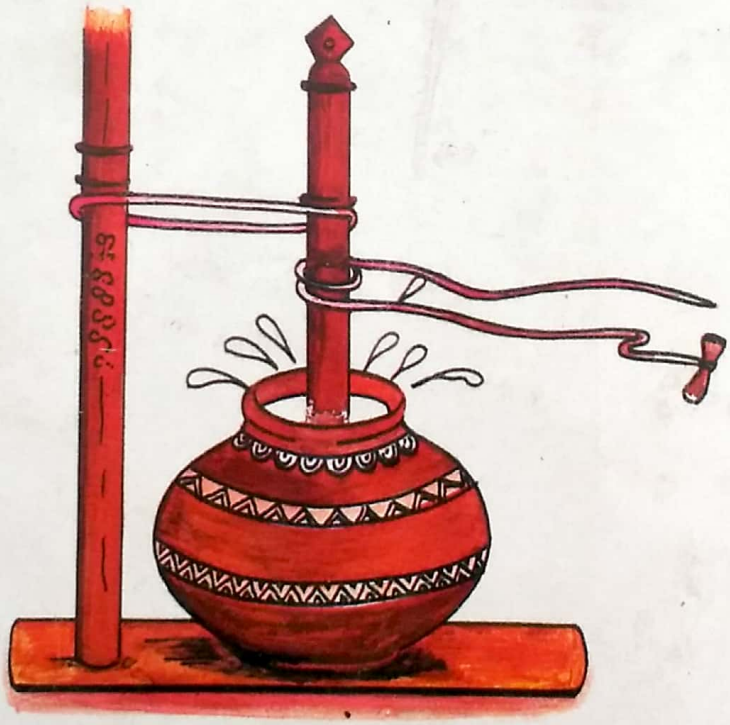

एकेनाकर्षन्ती श्लथयन्ती वस्तुतत्त्वमितरेण।
अन्तेन जयति जैनी नीतिर्मन्थाननेत्रमिव गोपी॥

वीर सेवा मन्दिर, नई दिल्ली - 110 002
Vir Sewa Mandir, New Delhi-110 002

Scanned by CamScanner

विषयानुक्रमणिका

विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1. स्थायी स्तम्भ- युगवीर-गुणाख्यान	प्रा. निहालचंद जैन	5-7
2. संपादकीय-दर्शनमोहनीय और....	डॉ. जयकुमार जैन	8-14
3. इतिभासियाइं का दार्शनिक विवेचन	डॉ. धर्मचन्द जैन	15-32
4. जैन साहित्य में लेश्या-विमर्श	डॉ.श्रीमतीराका जैन	33-47
5. गाँधी और जैनदर्शन	प्रो. बच्छराज दूगढ़	48-54
6. अर्जन के साथ विसर्जन के सूत्र उत्तराध्ययन के परिप्रेक्ष्य में	सुधा भण्डारी	55-64
7. Need of the Day-Comparative Study of Indic-religions	Prof. Sagarmal Jain	65-69
8. सम्मइसुत्तं में प्रतिपादित सह-अस्तित्व का दार्शनिक विवेचन	श्रीमती दीप्ति मेहता	70-79
9. न्यायविद्या-स्वरूप एवं परंपरा	डॉ. योगेश कुमार जैन	80-90
10. पुरस्कार एवं सम्मान	वी. के. जैन, महामंत्री	91
11. पुस्तक समीक्षा	प्रा. निहालचंद जैन	92-93
12. पाठकों के पत्र		94
13. नवीन कार्यकारिणी समिति-2015		95
14. वीर सेवा मंदिर के प्रकाशन ग्रन्थों पर विशेष छूट		96

Scanned by CamScanner

गांधी और जैनदर्शन

-- प्रो. बच्छराज दूगढ़

अहिंसा, जैन दर्शन और गांधी परस्पर कुछ अर्थों में समान दृष्टिगोचर होते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि ये तीनों परस्पर समानान्तर अर्थ ही नहीं रखते अपितु अहिंसा, जैनदर्शन और गांधी कई अर्थों में एक-दूसरे के बिना अपूर्ण हैं।

जैन दर्शन अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त के मूल आधारों पर आधारित है,[1] वहीं गांधी दर्शन के मूलाधार स्वधर्म, स्वदेशी व स्वराज हैं।[2] इस लेखन में यह प्रयास किया गया है कि जैन दर्शन के प्राचीन सिद्धान्तों को गांधी द्वारा जिन नवीन रूपों में अपनाया गया, उन्हें वैश्विक परिदृश्य में अच्छी तरह से समझा जा सके। जैनधर्म के विभिन्न सिद्धान्तों का सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक आधार यह स्पष्ट करेगा कि गांधी पर जैन दर्शन का प्रभाव था। यह भी कहा जा सकता है कि गांधी ने जैनदर्शन/ धर्म के कतिपय सिद्धान्तों की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक स्तर पर मानवीय और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के रूप में व्याख्या की।

जैनधर्म, गांधी और अहिंसा :

जैनधर्म में अहिंसा को बहुत सूक्ष्मता से विश्लेषित किया गया है। यहाँ अहिंसा का अर्थ केवल 'नहीं मारने' तक ही सीमित नहीं है। जैन दर्शन में मन, वचन और शरीर से किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचाने पर बल दिया गया है।[3] आचारांगसूत्र में कहा गया है- अहिंसक व्यक्ति न ही प्राणियों की हत्या करता है, न करवाता है और न ही हत्या करवाने की अनुमोदना करता है।[4] अहिंसा पूर्ण जागरूकता ही अवस्था है।[5] अहिंसा की यह समग्र व्याख्या वैश्विक सामंजस्य की व्याख्या करती है जिसमें मनुष्य और प्रकृति सम्मिलित है। मनुष्य के लिए जहाँ अहिंसा का सम्बन्ध प्रवृत्ति और अभिप्राय से है वहीं प्रकृति के लिए अहिंसा प्राणीमात्र के प्रति सम्मान है।

सामाजिक-सांस्कृतिक रूप में अहिंसा का तात्पर्य उस व्यवहार से है जो सभी प्रकार के शोषण से मुक्त हो। किसी भी प्रकार का शोषण, चाहे वह स्थूल हो या सूक्ष्म, क्रोध, मान, माया और लोभ की वृत्तियों द्वारा ही प्रेरित होता है।[6] समाज में अशांति के मूल में इन्हीं कषायों की उपस्थिति काम

Scanned by CamScanner

करती है। कषायों के उपशमन के लिए व्यक्तिगत प्रयास और जागरूकता ही वे साधन हैं जो एक अहिंसक समाज की संरचना में सहायता कर सकते हैं।

गांधी ने लिखा था- ''जैन धर्म के अतिरिक्त दुनिया में ऐसा कोई दूसरा धर्म नहीं है, जिसने अहिंसा की इतनी गहरी और व्यवस्थित व्याख्या जीवन में अनुप्रयोग के साथ की हो।[7] जैन दर्शन का केन्द्रिय सिद्धान्त अहिंसा है, गांधी दर्शन भी इसी पर आधारित है। गांधी ने एक राजनैतिक सक्रियतावाद का सिद्धान्त विकसित किया जिसे 'सत्याग्रह' कहा जाता है, पूर्णतः सत्य और अहिंसा पर ही आधारित है।[8] सत्याग्रह को ''असहयोग'' और ''निष्क्रिय प्रतिरोध'' के रूप में भी अनुदित किया गया। गांधी ने कहा- 'सत्याग्रह निश्चित रूप से सत्यवादियों का हथियार है। एक सत्याग्रही अहिंसा का कठोरता से पालन करने की प्रतिज्ञा करता है....।''[9]

सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे में गांधी अहिंसा की अपनी समझ में हिंसा के रूपों की चर्चा करते हैं। वे हिंसा के दो रूप स्वीकारते हैं- प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष हिंसा। प्रत्यक्ष हिंसा शारीरिक, दृश्य और कर्ता केन्द्रित है जिसका परिणाम शारीरिक चोट, मृत्यु एवं अंतिम परिणति के रूप में युद्ध है। हिंसा का दूसरा रूप अप्रत्यक्ष है। यह सहजतया दृश्यमान नही है। अप्रत्यक्ष हिंसा को संरचनात्मक हिंसा भी कहा जाता है। यह व्यवस्था पर आधारित होती है। सामान्यतः सामाजिक-आर्थिक जीवन में किसी न किसी रूप में यह विद्यमान रहती है। गांधी की विशिष्टता इसी में है कि उनके संवेदनशील मस्तिष्क ने हिंसा के उस सूक्ष्म स्वरूप को भली तरह समझा हो सहज रूप से दृष्टव्य नहीं है, किन्तु वह समाज में विभिन्न प्रकार के शोषण के रूप में व्यापक रूप से विद्यमान है। गांधी ने पुरजोर इस बात को स्वीकार किया कि वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे में शोषण ही हिंसा का मूल कारण है। गांधी ने समाज में व्याप्त शोषण के विभिन्न प्रकारों और साधनों की व्याख्या की, जैसे अधि-कार्यभार, कार्य की अमानवीय दशाएं, न्यूनतम मजदूरी नहीं दिया जाना, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति (जैसे- भोजन, आवास, कपड़ा, स्वच्छ पानी, पर्यावरण, शिक्षा, चिकित्सकीय सुविधा) का अभाव, काम करने के अवसरों का अभाव, बाल श्रम, लैंगिक अन्याय, मानवीय अधिकारों का हनन आदि। शोषण के ये सभी रूप संरचनात्मक हिंसा के व्यापक रूप हैं। इसलिए जब गांधी अहिंसक विश्व व्यवस्था की

Scanned by CamScanner

बात करते हैं तो उनका उद्देश्य समाज के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष- दोनों प्रकार की हिंसा को समाप्त करना था।

हिंसा के अभाव की स्थिति को ही शांति नहीं कहा जा सकता है। शांति की संस्कृति अथवा समाज में शांति की स्थापना तभी हो सकती है जब जीवन के प्रति सम्मान, करुणा, दया, अभय, मैत्री आदि के रूप में पल्लवित हो।[10] दूसरे शब्दों में, जहां सभी का उत्थान हो, गांधी जिसे सर्वोदय कहते हैं। अतः गांधी और जैनदर्शन के अनुसार अहिंसा सद्गुणों की स्थापना और दुर्गुणों का उन्मूलन है। सद्गुणों का विकास जीवन में स्वैच्छिक रूप से स्वीकृत व्रतों के पालन से होता है। 18 वर्ष की आयु में गांधी जब वकालत की पढ़ाई करने इंग्लैण्ड जा रहे थे तब उनकी माँ उन्हें इंग्लैण्ड भेजने में हिचकिचा रही थी। उन्होंने सुन रखा था- युवा, विवाहित व्यक्ति जब इंग्लैण्ड गये तो वे भ्रष्ट हो गये। उस समय गांधी की माँ ने जैन संत बेचरजी स्वामी से परामर्श किया। उन्होंने कहा- गांधी विदेश जाने से पूर्व माँ के समक्ष कुछ व्रत ग्रहण करें तभी उन्हें विदेश गमन की अनुमति दी जा सकेगी। गांधी ने प्रतिज्ञा ली- मैं विदेश में मांस, मदिरा और परस्त्रीगमन का त्याग करता हूँ। व्रत ग्रहण करने पर ही मेरी माँ ने मुझे जाने की अनुमति दी।[11] इन व्रतों एवं कुछ अन्य बातों के कारण से मैं समय बचा सका जिससे मुझे धर्मग्रन्थों के गंभीर अध्ययन का अवकाश मिला।

इच्छापरिमाण, स्वदेशी व स्वराज

जैन दर्शन और गांधी दोनों ही आर्थिक विकास के विरोधी नहीं है। उस आर्थिक विकास से कोई हानि नहीं है जो नैतिक पतन और सांस्कृतिक गिरावट से अछूता हो। इसीलिए आर्थिक क्रियाओं का निषेध नहीं है यदि वे प्राकृतिक एवं सामाजिक बाध्यताओं के अनुरूप हों।

दोनों ही विचारधाराओं में अर्थशास्त्र गहन रूप से नैतिकता से संबद्ध रहा है। सतत विकास का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है जब मानवीय गतिविधियां मनुष्य व प्रकृति के साथ सामंजस्य रखकर संपादित की जाएं। इच्छापरिमाण, इच्छाओं का विलोपन नहीं अपितु इच्छाओं का अल्पीकरण है।[12] इस सीमाकरण का मूल उद्देश्य यद्यपि आध्यात्मिक उत्थान है किन्तु इसका परिणाम सामाजिक व आर्थिक विकास के रूप में भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

Scanned by CamScanner

गांधी युग में आधुनिकीकरण और विकास की अवधारणा, एफ्रो-एशियन देशों- जो यूरोपियन शासन से मुक्त हुए थे, की प्रभुत्व वाली विचारधारा के रूप में उद्भुत हुई। इन देशों के मुख्य उद्देश्य थे-

1. तीव्र आर्थिक विकास एवं
2. पाश्चात्य प्रतिमान के अनुकरण में सामाजिक परिवर्तन।

इन लक्ष्यों की पूर्ति के प्रयासों ने भारत की सामाजिक, आर्थिक संरचना तथा आध्यात्मिक संपदा के विध्वंस का खतरा उत्पन्न कर दिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यह विकास सत्ता, लाभ और भौतिक सुख के आधारों पर अवलंबित था।[13]

विकास के इस प्रतिमान के विरुद्ध गांधी ने शरीर श्रम, आत्म-संयम तथा सद्गुणजनित सरल ग्रामीण जीवन की वकालत की। स्वदेशी की अवधारणा का उद्देश्य शरीर श्रम, प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग तथा स्वप्रबंधन की राजनैतिक संरचना के द्वारा आर्थिक आत्मनिर्भरता व पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त करना था। गांधी ने जिस स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की, वह इच्छा परिमाण के सिद्धान्त पर आधारित है। कहा गया है- **''स्वराज के लिए आत्मसंयम, अनुशासित-व्यवहार और व्यक्ति में समुदाय के सभी सदस्यों के प्रति दायित्वबोध की चेतना आवश्यक है।''**[14]

आर्थिक विकास की यह अवधारणा अनेक संदर्भों में प्रासंगिक है जिसमें पृथ्वी की सुरक्षा एवं न्यायपरक जीवनक्षम विश्वव्यवस्था का उद्भव भी सम्मिलित है।

समता तथा आत्मपीड़न के प्रति गांधी का तर्क :

पाश्चात्य दार्शनिकों ने बौद्धिकता को मनुष्य की एक प्रमुख विशेषता के रूप में स्वीकार किया है। सिगमंड फ्राइड जिन्होंने मनुष्य को भावों के संबन्ध में विश्लेषित किया; के बाद ही यह कहा गया कि मनुष्य जितना बौद्धिक प्राणी के साथ भावात्मक प्राणी भी है। समता सत् की सर्वोच्च अवस्था है जो सामान्य भाव स्थिति से उपरत है तथ जो राग और द्वेष से संबन्धित है। तकनीकी रूप से यह मोह विजय की अवस्था है, जिसमें इच्छाएं शून्य हो जाती हैं।[15] व्यावहारिक रूप में यह एक अहिंसक उपक्रम है जो करुणा, क्षमा और दूसरों के उत्थान से सम्पन्न है।

Scanned by CamScanner

आत्मपीडन जिसका प्रयोग सत्याग्रह में भी किया जाता है; के लिए गांधी का तर्क विरोधियों के तर्कों को काटने की तर्कपूर्ण रणनीति के रूप में प्रयुक्त किया जाना है।[16] दूसरों को समझने के लिए केवल तर्क पर बल देना अपर्याप्त है। गांधी के शब्दों में- यदि तुम वास्तव में कुछ महत्वपूर्ण करना चाहते हो तो तुम्हें केवल तर्क को ही संतुष्ट नहीं करना है, तुम्हें हृदय तक प्रवेश करना होगा। तर्क का सम्बन्ध मस्तिष्क से है। हृदय में प्रवेश कष्ट सहने से होता है। इससे एक व्यक्ति को भीतर से पहचानने की शुरूआत होती है।[17] इस प्रकार समता और आत्मपीड़न दूसरों को समझने के लिए उच्च अवस्थाएं हैं। कई अर्थों में ये रूपांतरण के साधन के रूप में प्रयुक्त होती है।

अनेकान्त और संघर्षमुक्त संस्कृति :

अनेकान्त सत् के विभिन्न रूपों का सिद्धान्त है। दूसरों के विचारों को जानने के लिए जैनदर्शन ने अनेकान्त के सिद्धान्त पर बल दिया। रुचि, विचार और व्यवहार में विरोध संघर्ष का मूल कारण है।[18] जैन दर्शन यह स्वीकार करता है- मानवीय समझ में इन विरोधों को दूर करना या समाप्त करना आसान नहीं है। स्वयं के दृष्टिकोण के आधार पर विरोधी विचारों की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए अपितु मतों की विभिन्नता का गलत और सही का दावा किये बिना सम्मान होना चाहिए।

गांधी ने 1926 में लिखा था- ''मैं अपने दृष्टिकोण से सदैव सत्य होता हूँ और कई बार मेरे आलोचकों के दृष्टिकोण से गलत। मैं जानता हूँ कि हम दोनों ही अपने-अपने दृष्टिकोणों से सही हैं।''[19]

अनेकान्त प्रत्येक व्यक्ति के दृष्टिकोण को समान महत्त्व देती है। दूसरे को समझने में यद्यपि कुछ दृष्ट एवं कुछ पृष्ठ होते हैं किन्तु वहां कभी भी कोई हाथ ऊपर नहीं होता है। इसीलिए वहां विरोधी विचारों के प्रति भी पर्याप्त सम्मान होता है। गांधी कहते हैं- ''मैं सत् के विभिन्न रूपों के इस सिद्धान्त को बहुत पसंद करता हूँ। यह वह सिद्धान्त है जिसने मुझे एक मुसलमान को उसके दृष्टिकोण से, एक ईसाई को उसके दृष्टिकोण से समझना सिखाया। जैनदर्शन के धरातल पर मैं ईश्वर के अकर्ता रूप को प्रमाणित करता हूँ और रामानुज दर्शन के धरातल पर ईश्वर के कर्ता रूप को। वस्तुतः तो हम सभी सत्य के सम्बन्ध में हम अविचारणीय पर विचार करते हैं, अवर्णनीय की व्याख्या करते हैं, अनाम को जानने की इच्छा करते

Scanned by CamScanner

हैं, इसीलिए हमारी भाषा मिथ्या होती है, अपर्याप्त होती है और प्रायः विरोधाभासी भी।[20]

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि जैन दर्शन के अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकान्त तथा गांधी के स्वधर्म, स्वदेशी व स्वराज की अवधारणा जीवन के लिए नया दृष्टिकोण है। ये समग्र रूप से एक नवीन मानव जीवन की संरचना प्रस्तुत करते हैं। हमारी जीवन शैली को संयमित करते हैं तथा एक नवीन विश्व व्यवस्था के निर्माण का आधार प्रस्तुत करते हैं। इसमें प्रकृति के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार, मानवीय गरिमा का सम्मान तथा संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान सम्मिलित है।

******

संदर्भ :

1. आचार्य महाप्रज्ञ, जैनदर्शन के मूल तत्त्व, आदर्श साहित्य संघ, दिल्ली, 2001 पृ. 19-21
2. Ali Asaraf, Gandhian Approach to Sustainable Development (Gandhism after Gandhi) Mittal Publication, New Delhi, 1999, p.17
3. दसवैआलियं, जिनदासचूर्णि, पृ. 20 एवं श्री भिक्षु आगम विषयकोश, संपादक-आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ, 1996, पृ. 76
4. आचार्य महाप्रज्ञ, टीकाकार-आचारांग, भाष्य, जैन विश्वभारती, लाडनूं, 2001, 3.46
5. आचार्य तुलसी, जैन सिद्धान्त दीपिका, आदर्श साहित्य संघ, चुरू, अध्याय-6
6. विशेषावश्यक भाष्य, गाथा 2990-91 एवं श्री भिक्षु आगम विषयकोश, संपादक-आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं, 1996, पृ.196
7. http/jainismus.hubpages.com/hub/Gandhi-and-Jainism
8. Gandhi M.K., An Autobiography or the Story of My Experiments with Truth, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1990 p.226
9. same.
10. शोभाचन्द्र भारिल्ल (संपा.), अनुवाद-मुनिश्री प्रवीणऋषि जी महाराज, प्रश्नव्याकरण, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2000, 2.107, पृ.159
11. Gandhi M.K., An Autobiography or the Story of My Experiments with Truth, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1990; p.33; Romain Rolland, Mahatma Gandhi Published in Great Britain, 1924, p. 4
12. आवश्यकसूत्र, पृ. 22 एवं श्री भिक्षु आगम विषयकोश, संपादक- आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, 1996 पृ. 625

Scanned by CamScanner

13. Ali Asaraf, Gandhian Approach to Sustainable Development (Gandhism after Gandhi) Mittal Publication, New Delhi, 1999, p. 13

14. Bhatt, Siddharth; Shukla, Dinesh, Gandhi & Peace, Devvrat Pathak Memorial Trust, Ahmedabad, p.93

15. आचार्य कुन्दकुन्द, प्रवचनसार, संपादक-हुकुमचन्द भारिल्ल,

16. Bondurant, Conquest of Violence, p. 227-229;

17. Sharp, Gene, The Positics of Nonviolent Action, Porter Sargent Publishers, Boston, 1985, p. 709

18. Sills, David L., International Encyclopedia of Social, The Macmillan, New York, 1972, Voll, III, p.236

19. जैन विश्व भारती, मार्च मई, 2002ए पृ. 53 20. वही, पृष्ठ 53

अध्यक्ष, अहिंसा एवं शांति विभाग,
निदेशक, शोध, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय,
लाडनूँ (राजस्थान)

आवश्यक सूचनाएँ

(१) अनेकान्त अंक 68/4 (अक्टू दिस. 2015) **''जैनधर्म एवं आयुर्वेद''** विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

(२) अनेकान्त-शोध त्रैमासिकी है। संपादक मण्डल के निर्णयानुसार इसमें समाचार आदि प्रकाशित नहीं किये जाते हैं।

(३) विद्वान लेखकों से अनुरोध है कि वे अपने अप्रकाशित एवं मौलिक शोधालेख ई-मेल अथवा कम्प्यूटर टाईप में ही भेजें। हाथ से सुलेख में लिखा भी भेजा जा सकता है, परन्तु फोटो कापी वाले लेखों पर विचार करना सम्भव नहीं होगा क्योंकि वे प्रायः अस्पष्ट होते हैं।

(४) कृपया अनेकान्त के लिए भेजा गया लेख अन्यत्र जैन पत्रिकाओं में तब तक न भेजें जब तक उसकी अस्वीकृति की सूचना आपको न मिल जाये। लेख के प्रकाशित होने में कम से कम छह माह से एक वर्ष का समय लग सकता है।

(5) अनेकान्त के इस अंक से आचार्य पं. जुगलकिशोर 'मुख्तार' संस्थापक वीर सेवा मंदिर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में, आगामी प्रत्येक अंकों में स्थायी स्तम्भ के रूप में प्रकाशन सुनिश्चित किया गया है। इनके संबन्ध में पाठक विद्वानों के पास कोई संस्मरण हों तो भेजने की कृपा करें।

– संपादक

Scanned by CamScanner